ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

जैज़ संगीत शैली का वर्तमान स्वरूप

Present Form of Jazz Music Style

Paper Submission: 15/01/2020, Date of Acceptance: 26/01/2020, Date of Publication: 27/01/2021

शिप्रा पन्त
विभागाध्यक्षा,
सहायक प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रामनगर,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

जैज़ संगीत का प्रयोग भारतीय फिल्म जगत काफी पहले से होना प्रारम्भ हो गया था। वर्तमान में भारत में प्रचलित संगीत में कई पाश्चात्य शैलियों का मिश्रण किया जा रहा है जिसमें जैज़ संगीत लोकप्रिय है। 50 से 60 तक के दशक में जैज़ का रूप काफी हद तक पारम्परिक था लेकिन अब इसमें बहुत परिवर्तन आ चुका है। वर्तमान में जो जैज़ संगीत प्रचलन में है वह अलग मूड पर आधारित जैज़ संगीत है। यह विविध भावों एवम् नृत्य को सहजता से अभिव्यक्त करने में समर्थ है। बीसवीं सदी में जैज़ और भारतीय शास्त्रीय संगीत के साथ सम्मिश्रण से एक नये रूप Ino-Jazz शैली का उद्भव हुआ। स्वाधीनता संग्राम के समय लगभग सभी पंचसितारा होटलों एवम् सभी नाईट क्लबों में यह संगीत प्रस्तुत किया गया।

Jazz music has been used in the Indian film world for a long time. Currently, popular music in India blends various western styles, among which Jazz is quite prominent. During the 1950s and 1960s, the form of Jazz used was largely traditional, but presently this is much different. At present, the form of Jazz in use is based on a different mood and can easily express various moods and dance. A new form, Indo-Jazz, emerged during the 20th century by blending Jazz and Indian Classical music. During the freedom movement, this was presented in almost all five-star hotels and night clubs.

मुख्य शब्द : इण्डो–जैज़, शास्त्रीय संगीत, सम्मिश्रण, भाव, नृत्य।
Indo-Jazz, Indian Classical Music, Blending, Dance, Moods, Indian Independence.

प्रस्तावना

भारतीय संगीत पर जैज़ का प्रभाव बहुत पुराना और व्यापक रहा है। जैज़ एक ऐसा पाश्चात्य संगीत रहा है जो जैम सैशन ब्लैक चर्च, नाईट क्लब और शोकसभा से होते हुए पूरे विश्व में सुना और गाया जाने वाला संगीत रहा है। इस शैली के प्रचार–प्रसार एवम् प्रचलन की पृष्ठभूमि में इसमें निहित विशिष्टताओं एवम् मधुर सांगीतिक तत्वों का अपूर्व योगदान रहा। जैज़ संगीत शैली अपने में रोमांचक शैली रही है, जिसमें ताल व लयबद्ध सुषिर व अवनद्ध और तत् पाश्चात्य वाद्यों की एक अलग भूमिका रही है। जैज़ अफ्रीकी अमेरिका में 1920 शताब्दी में प्रचार में आया। अफ्रीकी अमेरिका की उपलब्धता के कारण इस संगीत शैली का प्रचार पूरे विश्व में हुआ।

अमेरिकन संगीत जैज़ का 20वीं शताब्दी तक पूरे विश्व में अपना प्रभुत्व स्थापित हो गया था।

यह पाश्चात्य शैली विश्व भर में प्रसिद्ध होने के साथ–साथ इसके संगीतज्ञ भी विश्व भर में अपनी कला का प्रदर्शन करने लगे। इस पाश्चात्य शैली जैज़ में नृत्य को भी प्रदर्शित किया जाना सम्भव हो सका। इस शैली में हर तरह के भावों को प्रदर्शित करने के साथ नृत्य को भी आसानी से प्रदर्शित कर सकते हैं।

भारत में जैज़ संगीत शैली का आगमन

जैज़ पाश्चात्य संगीत शैली भारत में सर्वप्रथम 1920 ई0 में मुम्बई में उसके संगीतज्ञ लाये। मुख्यतः मुम्बई ही बॉलीवुड का मुख्य केन्द्र रहा है और जैज़ संगीत शैली का यहाँ सर्वाधिक प्रचार रहा। यह शैली अफ्रीकी– अमेरिकन संगीत का अंग बन गई जिसे पश्चात्वर्ती समय में पाश्चात्य संगीतज्ञ भारत लाए तब भारतीय लोग भी इस पाश्चात्य शैली जैज़ को सीखने लगे। दूसरी तरफ गोवा के गोअन संगीतज्ञ और वादक भी पाश्चात्य शैली की ओर आकर्षित हुए।

जैज़ की लोकप्रियता के पीछे उस शैली की अपनी विशेषताएँ और उसके कलाकारों की उपलब्धता रही है।

वर्तमान स्वरूप में जैज़ संगीत शैली

वर्तमान में जो जैज़ का पारम्परिक रूप था उसमें धीरे–धीरे परिवर्तन हो गया। इसमें ताल लय, हारमनी और कॉर्ड को भी सम्मिलित किया गया। आधुनिक संगीतकार अंमित त्रिवेदी ने अपने आने वाली अल्बम 'बॉम्बे वेलवेट' के गाने जैज़ से प्रेरित होकर लिखे। इस पूरी अल्बम में जैज़ संगीत शैली का मनमोहक प्रयोग हुआ है। बीते दो दशक से बॉलीवुड फिल्म में जैज़ का प्रयोग हुआ है जो इस प्रकार है–

1. शंकर–ऐहसान–लॉय–शहर मेरा (One by two 2011)
2. 2015 में दिल धड़कने दो (Girls Like to swing)
3. 2012 में एक मै और एक तू (Aunty Ji)
4. 2008 में बातें (rock on 2008) और छोटे ट्रैक पर जाने तू या जाने न, 2008
5. 50 से 60 तक के दशक में फिल्मों में जितने भी गाने होते थे क्लबों के गाने होते थे। वे सभी जैज़ संगीत शैली में लोगों द्वारा पसंद किए जाते थे। पाश्चात्य शैली जैज़ हर मूड के साथ नृत्य को भी समाहित किए हुए थी। जैसे–

1. गोरे गोरे ओ बाँके छोरे (समाधि 1950)
2. शोला जो भड़के (अलबेला 1951)
3. बाबू जी धीरे चलना (आर–पार 1954)
4. मेरा नाम चुन चुन (हावर्ड ब्रिज 1958)
5. आईये मेहरबान , (हावर्ड ब्रिज 1958)
6. दिल को हज़ार बार, (मर्डर, 2004)
7. एक लड़की भीगी–भागी सी, (चलती का नाम गाड़ी, 1958)
8. बॉम्बे वैलवेट के सभी गीत, (2015)

उस समय जैज़ को प्रस्तुत करने के लिए सेक्सोफोन और बास गिटार का प्रयोग किया गया जिससे जैज़ और प्रसिद्ध हो सके। धीरे–धीरे जैज़ संगीत में परिवर्तन हुआ। यद्यपि बालीवुड में भी सारे गाने पाश्चात्य संगीत जैज़ पर आधारित नहीं थे। पश्चात्वर्ती समय में बालीवुड में मेलोडी और भावपूर्ण संगीत के प्रभाव में आने से जैज़ पर भी इस संगीत का प्रभाव पड़ा तब इस तरह का संगीत उत्पन्न करने के लिए सेक्सोफोन और ट्रम्पेट का प्रयोग हुआ और पाश्चात्य संगीत की जैज़ की धुनों में इन पाश्चात्य वाद्य यंत्रों का प्रयोग होना शुरू हुआ।

इसके पूर्व जब जैज़ शैली लोकप्रियता प्राप्त कर रही थी तब गोवा में पाश्चात्य शैली अधिक प्रचलित थी। क्योंकि, वहाँ पुर्तगाली लोग थे, जो पाश्चात्य संगीत शैली से प्रभावित थे। इसीलिए गोवा के कई संगीतज्ञों ने बालीवुड संगीत में जैज़ का प्रयोग किया और वर्तमान में भी कई प्रयोग करते आ रहे हैं। इस तरह धीरे–धीरे कलकत्ता, पुणे, दिल्ली, गोवा में इसका प्रचार हो गया। पर गोवा में तो पहले से ही गोअन म्यूजिशियन और पाश्चात्य शैली का प्रभाव रहा था। गोअन संगीत वह प्रथम संगीत था जिसमें जैज़ पाश्चात्य शैली की ध्वनि को गहराई से आत्मसात किया गया। भारत के हिन्दी फिल्म उद्योग के इसका भरपूर प्रयोग हुआ।

बालीवुड में जैज़ संगीतकार

हिन्दी फिल्म उद्योग के शुरूआती दिनों में फिल्म संगीत में निष्णात् जैज़ पाश्चात्य संगीत के वादक व संगीतज्ञ सभी अफ्रीकी अमेरिकन थे। धीरे–धीरे गोअन संगीत पर जैज़ संगीत के प्रभाव परिलक्षित होने लगे। जिसमें अवोनिया जेवियर ताज़, फ्रैंक फर्नाड, दत्ताराम बाबूराव नईक, क्रिस पेरी, एंथोनी गोंज़ाल्विस, अल्फ्रेड रोज, इलॉक डेनियल और सेबस्टियन जैसे नाम प्रसिद्ध रहे हैं। फिल्मी धुनें पश्चिमी संगीत की लिपि में लिखी जाती थीं तथा गोवा और मुम्बई में आये अफ्रीकी–अमेरिकी संगीतकारों ने जैज़ संगीत शैली की मैलोडी और स्वर–माधुर्य से बॉलीवुड को पूर्णतया प्रभावित किया। जैज़ में प्रयुक्त वाद्यों नें इस शैली को अधिक आकर्षक बनाया। इसमें पाश्चात्य वाद्य–यंत्रों यथा darinet, drum, piano, gitar, trumpet आदि का प्रयोग किया गया था जिसमें एंथोनी गोंजाल्विस ने अमिताभ बच्चन के मशहूर गीत "My name is anthony Gonzalvis' को अमर बना दिया।

जैज़ एवम् बॉलीवुड संगीत का सम्मिश्रण

जैज़ संगीत पर आधारित बॉलीवुड गीतों ने 1950 से 1960 के दशक में खूब धूम मचाई। इसका श्रेय अफ्रीकी अमेरिकन संगीतकारों को जाता है जिन्हें मुम्बई में आश्रय मिला, उन्होंने इस संगीत शैली को क्लबों में प्रचलित किया और गोवा के गोअन संगीतकारों ने इस नवीन प्रकार की मिश्रित संगीत शैली को प्रसिद्ध कर दिया।

उस दौर में फ्रैंक फर्नेन्ड, सेबस्टियन डिसूजा और एंथोनी गोजाल्विस ने पाश्चात्य संगीत के अपने ज्ञान से हिन्दी फिल्म संगीत को नई ऊँचाइयाँ दीं। संगीतकार सी0 रामचन्द्र, शंकर जयकिशन, ओ0पी0 नय्यर, लक्ष्मीकान्त प्यारेलाल और आर0डी0 वर्मन ने अपनी फिल्मों में जैज़ को स्थान दिया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. जैज़ संगीत का बॉलीवुड संगीत में मिश्रण।
2. इंडो–जैज़ संगीत का ऐतिहासिक विश्लेषण।
3. इंडो–जैज़ संगीत की वर्तमान स्थिति।

शोध–प्रविधि

पुस्तकों का पठन–पाठन, वार्त्ता द्वारा, शोध पत्रों द्वारा ज्ञानवर्धन।

निष्कर्ष

जैज़ संगीत बीसवीं शती से विकसित होता हुआ वर्तमान स्थिति तक अत्यन्त लोकप्रिय विधा के रूप में हमारे सम्मुख अवतरित हुआ है। इसकी इंडो–जैज़ शैली की पृष्ठभूमि में इस शैली की सहजता एवम् नृत्य आदि सहभागी क्रियाओं की प्रस्तुति सरल रूप से होना रहा । भारतीय संगीत विशेषकर बॉलीवुड संगीत में इस शैली को मुक्त रूप से स्वीकार किया गया और इसके प्रयोग से युक्त होकर यह नवीन कलेवर में ढलकर प्रसिद्ध होते हुए वर्तमान स्वरूप में हमारे सम्मुख है। गिटार एवम् ड्रम की संगति में ट्रोम्बोन, ट्रम्पेट, सेक्सोफोन, क्लैरिनेट की झूमती एवम् झुलाती सी धुन जैज़ संगीत की पहचान है जोकि , हिन्दी गीतों में स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Rossi, Marc, 2013, The influence of Indian Music on Jazz, sessionoille music 101, http://sessionoille.com/artciles/the-influence-of-indian-music-on jazz*
2. *Brill Zeiden E.J., (1982), Contribution Asian Studies, the Journal of Asian studies, Vol-41, issue 2.*
3. *Bhattacharya R., 2011. Bollywood and Globalization: Indian Popular Cinema, Nation and Diaspora.*
4. *Geetha, J. (2003). Bolloywood ending.; Sight & sound, Amsterdam: Harwod Academic Publishing.*
5. *Fernandes n & Kapoor P. (2012), Foxtrot Tajmahal: The story of Bombay's Jazz age, Roli books Private Ltd.*
6. *Sarrazin N., Focus: Popular music in contemporary Inidia, Routledge,2019*
7. *Lavezzoi P., The dawn of Indian music in the west, Continuum publisher, 2007*
8. *Warren r.pinckney, volume xxi, number 1, Asian music, 1989/1990, Jazz in India: perspectives on historical development and musical acculturation.publisher University of Texas*